पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 01.01.2017 इस अंक का मल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868002130

आर्य महासम्मेलन
फाईनल तैयारी बैठक

रविवार, 22 जनवरी 2017, सायं 4 बजे
स्थानः आर्य समाज, दीवान हाल, चांदनी चौक,दिल्ली
कृपया एकत्रित दान राशी व राशन साथ लेते आयें
—अनिल आर्य

वर्ष-33 अंक-15 पौष-2073 दयानन्दाब्द 192 01 जनवरी से 15 जनवरी 2017 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.01.2017, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 90वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सोल्लास सम्पन्न

स्वामी श्रद्धानन्द के आदर्शो को युवाओं तक पंहुचाये—सांसद प्रवेश वर्मा

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन नया बाजार को ''राष्ट्रीय स्मारक'' घोषित करने की मांग

सांसद प्रवेश वर्मा का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,सुभाष आर्य,यशपाल आर्य,सुरेन्द्र कोहली,आचार्य प्रेमपाल शास्त्री व मंच पर बांये से ओमप्रकाश जैन,यशपाल आर्य,सुभाष आर्य,प्रवेश वर्मा व डा. अनिल आर्य।

नई दिल्ली । शुक्रवार, 23 दिसम्बर 2016, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्,नई दिल्ली के तत्वावधान में 151,साउथ एवन्यू में प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी,गुरूकुल कांगड़ी,हरिद्वार के संस्थापक,मूर्धन्य आर्य संन्यासी ''स्वामी श्रद्धानन्द जी का 90 वां बलिदान दिवस'' समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह में दिल्ली के कौने कौने से सैंकड़ो आर्य प्रतिनिधियों ने उत्साह के साथ भाग लिया। समारोह के मुख्य अतिथि सांसद प्रवेश साहिब सिंह ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से प्रेरणा लेकर देश की एकता और अखण्डता के लिए सब आर्य जन एक जुट हों, यह गर्व की बात है कि आर्य समाज का शिक्षा के क्षेत्र में अमूल्य योगदान रहा ओर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरूकुलीय शिक्षा को पुनः स्थापित किया। आज स्वामी श्रद्धानन्द जी के आदर्शो को युवाओं तक पंहुचाने की आवश्यकता है। स्वामी श्रद्धानन्द ने पूरे विश्व को आपसी भाई चारे का सन्देश दिया जिसकी आज अत्यन्त आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। आज युवा शक्ति को आर्य समाज के आन्दोलन के साथ जोड़ने की आवश्यकता है जिससे महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं का प्रचार प्रसार बढ़ सके।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द पूरे देश के लिए श्रद्धा के केन्द्र बिन्दु हैं,उन्होंने गुरूकुल कांगड़ी जैसी महान शिक्षा संस्था की स्थापना की तथा 1919 में जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद भयभीत अमृतसर में स्वागताध्यक्ष बन कर कांग्रेस के राष्ट्रीय अधिवेशन को सफल बनाया तथा रौलेट एक्ट के विरूद्ध निकाले जुलूस का नेतृत्व कर दिल्ली के चांदनी चौक टाउन हाल घन्टाघर पर अग्रेंजी संगीनों के सामने सीना तान दिया, यह उनकी निर्भिकता का ज्वलन्त उदाहरण है। हमें उनके जीवन से प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए।

श्री सुभाष आर्य (नेता सदन,दक्षिण दिल्ली नगर निगम) ने कहा कि उनके बलिदान दिवस पर उन्हें याद करने का अर्थ है कि सामाजिक समरसता को बढ़ावा देना। आपसी भाई चारे से समाज व देश को मजबूत बनायें यही महापुरूषों के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि हो सकती है।

आचार्य प्रेमपाल शास्त्री ने कहा कि महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं को आगे बढ़ाने का कार्य स्वामी श्रद्धानन्द ने किया हमें इस विरासत को और आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। आर्य समाज को राष्ट्र का सजक प्रहरी बन कर बुराईयों के खिलाफ लड़ना है। बहिन गायत्री मीना ने कहा कि सबसे पहले कन्या महाविद्यालय की जालन्धर में स्थापना करके स्वामी श्रद्धानन्द ने नारी शिक्षा की शुरूआत की,सामाजिक कुरीतियों को दूर करने से लेकर देश की आजादी के लिए अपना सब कुछ बलिदान कर दिया ऐसा उदाहरण मिलना काफी कठिन है। समारोह का संचालन परिषद् अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने किया। वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री व आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने यज्ञ करवाया। इस अवसर पर परिषद् के महामन्त्री महेन्द्र भाई,महापौर श्याम शर्मा,सुनील गुप्ता(केन्द्रीय कारागार),पूर्व राजदूत विद्यासागर वर्मा,यशपाल आर्य (पार्षद),राज सरदाना ने भी सम्बोधित किया। आर्य नेता ओम सपरा, रवि चड्डा,सुरेन्द्र कोहली,ओमप्रकाश जैन,देवेन्द्र भगत,सुरेश आर्य,रामकुमार सिंह,राजेश मेहन्दीरता,यशोवीर आर्य,प्रवीन आर्य,अरूण आर्य,ब्रह्मप्रकाश मान,वेद प्रकाश,हरिओम दलाल,रविन्द्र मेहता,अमित मान,जितेन्द्र डावर,माधव सिंह,पी.के.सचदेवा,अर्चना पुष्करना,ओमप्रकाश पाण्डेय,विवेक चावला,गोपाल जैन आदि उपस्थित थे। केन्द्र सरकार से सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन नया बाजार दिल्ली को ''राष्ट्रीय स्मारक'' घोषित करने की मांग की गई।

स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवनी का लोकार्पण करते चौ. ब्रह्मप्रकाश मान, वेदप्रकाश आर्य, रामकुमार सिंह, सुरेन्द्र कोहली, सुभाष आर्य, सांसद प्रवेश वर्मा व डा.अनिल आर्य, सामने श्रद्धालु आर्य जन जो कड़कदार सर्दी में भी सुबह सुबह साउथ एवन्यू पहुंच गये।

23 दिसम्बर को बलिदान दिवस के अवसर पर

स्वामी श्रद्धानन्द जी को उनके बलिदान दिवस पर नमन

– मनमोहन कुमार आर्य

23 दिसम्बर, 2016 को ऋषिभक्त स्वामी श्रद्धानन्द जी का 90 वां बलिदान दिवस है। आज ही के दिन सन् 1926 में दिल्ली में उनको एक विधर्मी आततायी जनूनी हत्यारे अब्दुल रसीद ने रुग्णावस्था में गोली मारकर उनको शहीद कर दिया था। हमारे देश के इतिहास में हमारे देश के हिन्दू बन्धुओं को विदेशी यवनों ने देश पर आक्रमण कर यहां के लोगों को मारा, काटा व पीटा, बहिनों व माताओं की इज्जत से खिलवाड़ किया, हमें गुलाम बनाया और हमें जजिया कर तक देना पड़ा। अनेकानेक और भी अन्याय व उत्पीड़न झेलना पड़ा। इन विदेशी आततायियों के जुल्मों की असंख्य कहानियां है। यह सिलसिला शताब्दियों तक चला। उसके बाद अंग्रेजों ने भारत को गुलाम बनाया और भारत की जनता पर अमानुषिक अत्याचार किये साथ ही भोले भाले लोगों का धर्मान्तरण भी किया। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द ने जन्म लेकर जनजागरण करते हुए वैदिक धर्म व संस्कृति का शुद्ध स्वरूप प्रस्तुत किया और उसका प्राणपण से प्रचार किया। ईश्वर ने महर्षि दयानन्द को गजब की बुद्धि व ज्ञान दिया था। समाज सुधार, अज्ञान तथा अन्धविश्वास दूर करने की प्रेरणा भी उन्हें अपनी आत्मा और अपने विद्या गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती से मिली थी। स्वामी दयानन्द ने चुनौती देते हुए घोषणा की थी कि वेद ही वस्तुतः संसार की समस्त मानव जाति का एकमात्र धर्मग्रन्थ है। वेदानुकुल मान्यतायें व सिद्धान्त ही ईश्वर प्रदत्त होने से उन्हें स्वीकार थे और वेद विरुद्ध सभी मान्यताओं व सिद्धान्तओं का वह प्रमाणों, युक्तियों व तर्कों से खण्डन करते थे। उनके समय में संसार का कोई वेदेतर विद्वान उनकी किसी मान्यता का युक्ति व प्रमाण के साथ खण्डन नहीं कर सका। स्वामी दयानन्द के वेद प्रचार के कार्य के कारण ही 30 अक्तूबर, 1883 ई. को उनके विरोधी शत्रुओं द्वारा धोखे से विषपान द्वारा उनकी मृत्यु के बाद उनके शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने उनके कार्यों को कुशलता व योग्यतापूर्वक निभाया। स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वामी दयानन्द की वेदों की शिक्षाओं और सिद्धान्तों पर आधारित गुरुकुलीय शिक्षा का उद्धार किया। उन्होंने सन् 1902 में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की थी जहां वेदों के अनेकानेक विद्वान बनें जिन्होंने शिक्षा, अध्यापन, पत्रकारिता, स्वतन्त्रता आन्दोलन, इतिहास, धर्म प्रचार, शुद्धि, जन्मना जाति के विरोध में प्रचार व दलितोत्थान आदि कार्यों सहित अनेकानेक समाज सुधार के कार्य किये और वैदिक धर्म का प्रचार कर भारत का गौरवमय इतिहास रचा है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वह वैदिक धर्म व संस्कृति के अनुरागी महापुरुष थे। आदर्श ईश्वर भक्त, वेदभक्त, देशभक्त, मानवता के पुजारी, शिक्षा शास्त्री, समाज सुधारक और वेद धर्म प्रचार सहित स्वामी श्रद्धानन्द स्वतन्त्रता आन्दोलन के शीर्ष नेता और दलितों के मसीहा थे। उनके द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी व अन्य गुरुकुल आज भी वैदिक धर्म व संस्कृति के उत्थान में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। स्वामी जी ने देश की स्वतन्त्रता के आन्दोलन में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रालेट एक्ट के विरोध में सन् 1919 में उन्होंने दिल्ली में अंग्रेज सरकार के विरोध में आन्दोलन के नेतृत्व की बागडोर अपने हाथों में ली थी और उसे सफल किया था। जिस आन्दोलन का उन्होंने नेतृत्व किया था, उसके जलूस के चांदनी चौक आने पर अंग्रेजों के गुरखा सैनिकों ने अपनी बन्दूकें व संगीने तान दी थी। तभी भीड़ को चीर कर स्वामी श्रद्धानन्द जी सैनिकों के सामने आये थे और सीना खोलकर सैनिकों को ललकारते हुए बोले थे, 'हिम्मत है तो मेरे सीने पर मारो गोली'। स्वामी जी की यह ललकार, उनकी वीरता, निर्भयता, निडरता व साहस को देखकर वहां तैनात अंग्रेज अधिकारी घबरा गया था और उसने सैनिकों को बन्दूकें नीचे करने का आदेश दिया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की यदि अन्य घटनाओं को छोड़ भी दिया जाये तो यही घटना उन्हें महान् बनाने के लिए काफी है। इससे जुड़ी घटना यह भी है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की वीरता की यह खबर पूरी दिल्ली और देश भर में फैल गई थी। इससे प्रभावित होकर दिल्ली की जामा मस्जिद के मिम्बर से उन्हें मुस्लिमों की एक सभा को सम्बोधित करने के लिए आमंत्रित किया गया था। स्वामी जी ने वहां पहुंच कर भी एक इतिहास की रचना की। उन्होंने जामा मस्जिद के मिम्बर से वेद मन्त्र 'ओ३म् त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथः। अधा ते सुम्नी महे।।' बोल कर अपना सम्बोधन आरम्भ किया था और भारी मुस्लिम जनसमूह में उनकी जय जयकार हुई थी। उसके बाद यह सम्मान किसी गैर मुस्लिम व्यक्ति को कभी नहीं मिला कि वह जामा मस्जिद के मिम्बर से सम्बोधित कर सके। प्रत्यक्ष दर्शियों व समकालिन लोगों ने लिखा हैं कि चांदनी चौक की घटना से स्वामी श्रद्धानन्द जी दिल्ली के बेताज बादशाह बन गये थे। बताते हैं कि स्वामी जी ने जामा मस्जिद से अपने सम्बोधन में कहा था कि हिन्दी का हम शब्द 'ह' से हिन्दू व 'म' से मुसलमान को दर्शाता है और यह शब्द दोनों समुदायों की एकता का प्रतीक है।

देश की स्वतन्त्रता के इतिहास में अमृतसर में 13 अप्रैल, सन 1919 की बैसाखी के दिन जलियांवाला बाग की नरसंहार की घटना प्रसिद्ध है जिसमें शान्तिपूर्ण सभा कर रहे हजारों स्त्री व पुरुषों को बिना चेतावनी दिए गोलियों से भून दिया गया था। गोली चलाने का आदेश ब्रिगेडियर जनरल रेजीनाल्ड डायर ने दिया था। इस गोलीकाण्ड में लगभग 1500 लोग मरे थे और 1200 से अधिक घायल हुए थे। इसके विरोध में चेन्नई में कांग्रेस का अधिवेशन आयोजित किया गया था। इसके लिए कोई उपयुक्त नेता न मिलने पर स्वामी श्रद्धानन्द जी को ही अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष बनाया गया था। इसकी एक विशेषता यह थी कि यहां स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना स्वागत भाषण हिन्दी में दिया था। इस घटना से स्वामी श्रद्धानन्द कांग्रेस के राष्ट्रीय नेता की कोटि के नेता बन गये थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने मलकाने राजपूत जिनके सभी रीति रिवाज व पूजा पद्धतियां आदि हिन्दू व हिन्दुओं के समान थीं, मुसलमान कहलाते थे। वह मुस्लिम मलकाने राजपूत चाहते थे उनको उनके पूर्वजों के धर्म हिन्दुओं में शामिल कर लिया जाये। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उनका यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था और भारतीय शुद्धि सभा की स्थापना कर लगभग 2 लाख की संख्या में मलकाने राजपूतों को शुद्ध कर उन्हें हिन्दू धर्म में प्रविष्ट कराया था। उनका यह कार्य भी इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। यह शुद्धि ही वस्तुतः वेद प्रचार आन्दोलन है जिसका एक उद्देश्य भय व प्रलोभन आदि अनेक कारणों से अतीत में धर्मान्तरित अपने बिछुड़े भाईयों को ईश्वरीय ज्ञान वेद की शरण में लाया जाना है। आर्य जाति इस कार्य के महत्व को जानकर इसका अनुसरण करेगी तो इतिहास में जीवित रहेगी अन्यथा इसकी इतिहास में पूर्व जो अवस्था हुई है, भविष्य में उससे भी बुरी हो सकती है। हम यह भी बता दें कि आर्यसमाज का वेद प्रचार और शुद्धि का आन्दोलन सत्य को ग्रहण करने और असत्य के त्याग करने के सिद्धान्त पर आधारित है। आर्यसमाज सभी मतावलम्बियों की धर्म विषयक जिज्ञासाओं की सन्तुष्टि करता है जबकि अन्य ऐसा नहीं करते। मनुष्य जाति की उन्नति का एकमात्र कारण सत्य का प्रचार ही है, अतः आर्यसमाज को सत्य ज्ञान के भण्डार वेदों का संगठित होकर पुरजोर प्रचार करना चाहिये। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दलितोत्थान का कार्य भी प्रभावशाली रूप से किया। कांग्रेस में रहते हुए उन्होंने अनुभव किया कि उनके इस कार्य में कांग्रेस द्वारा वह प्राथमिकता व सहयोग नहीं मिल रहा है जिसकी उन्हें अपेक्षा व आवश्यकता थी, तो उन्होंने अपना रास्ता बदलते हुए कांग्रेस छोड़ दी। इतिहास में यह भी पढ़ने को मिलता है पंजाब में किसी स्थान पर सवर्ण हिन्दू अपने कुओं से दलितों को पानी नहीं भरने देते थे। ऐसे स्थानों पर स्वामी श्रद्धानन्द और उनके आर्यसमाजी अनुयायी स्वयं पानी भरकर दलित भाईयों के घर पहुंचाते थे। हम अनुभव करते हैं कि आर्यसमाज व इसके नेताओं ने समाज के उपेक्षित व दलित वर्ग को दलित नाम दिया और उनके उत्थान के लिए दलितोत्थान का आन्दोलन चलाया। कांग्रेस ने इन्हें दलित बन्धुओं को एससी व एसटी आदि बनाकर सुविधाभोगी बना दिया जिससे वह समाज में घुलने मिलने के स्थान पर स्वयं को पृथक सा अनुभव करने लगे। आर्यसमाज दलितों का वैदिक शिक्षा द्वारा उत्थान कर उसका समग्र हिन्दू समाज में गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार समावेश करना चाहता था जबकि राजनीतिक दलों ने उन्हें सुविधा देकर उन्हें अपना वोट बैंक बना लिया जिससे दलितोत्थान का कार्य अवरुद्ध हो गया। हमारे सामने ऐसे उदाहरण हैं कि कुछ दलित परिवारों के बन्धु गुरुकुलों में पढ़कर वेदों के विद्वान बने, वेदों पर टीकायें आदि लिखी, मांस–मदिरा का सेवन त्यागा, स्वास्थ्यप्रद घी–दुग्ध आदि का भोजन किया, आर्यसमाज में हिन्दुओं के घरों में पूजा पाठ कराने वाले सम्मानित पुरोहित बनें और समाज में सम्मानित स्थान पाया जबकि आर्यसमाज से पृथक दलित सामाजिक दृष्टि से वह स्थान प्राप्त नहीं कर सके। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सद्धर्म प्रचारक पत्र का सम्पादन व प्रकाशन भी किया था। ऋषि दयानन्द के हिन्दी को महत्व दिये जाने के कारण आपने, पंजाब में उर्दू पाठको की बहुसंख्या होने पर भी, अपने पत्र को उर्दू से हिन्दी में प्रकाशित करना आरम्भ कर दिया था। इससे उन्हें भारी आर्थिक घाटा भी हुआ था परन्तु धर्म को महत्व देने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी के लिए आर्थिक घाटे का महत्व तभी था जब कि सिद्धान्त के विपरीत न हो। स्वामी जी आर्यसमाज, आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद पर रहे। ऋषि दयानन्द जी का खोजपूर्ण जीवन चरित लिखाने का श्रेय भी आपको है। ऋषि जीवन के अनुसंधानकर्ता और लेखक पं. लेखराम जी आपके गहरे मित्र व सहयोगी थे। दोनों में गहरे आत्मीय सम्बन्ध थे। आपने पं. लेखराम जी की एक मुस्लिम आततायी द्वारा हत्या के बाद उनका श्रद्धापूर्ण शब्दों में जीवन चरित्र लिखा है। यह एक वैदिक धर्म पर शहीद हुए महापुरुष का अपने से पहले धर्म की वेदी पर शहीद पं. लेखराम को श्रद्धांजलि है। इसे देश की युवा पीढ़ी को अवश्य पढ़ना चाहिये। स्वामी श्रद्धानन्द जी एक बहुत अच्छे लेखक भी थे। आप अंग्रेजी, उर्दू, हिन्दी आदि भाषाओं के विद्वान थे। आपने हिन्दी व उर्दू में पर्याप्त संख्या में ग्रन्थ लिखे हैं। आपका समस्त साहित्य, कुछ उर्दू आदि ग्रन्थों को छोड़कर, 11 खण्डों में वैदिक साहित्य के प्रकाशक मै. विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली से प्रकाशित हुआ था। इसका नया संस्करण इसी प्रकाशक द्वारा दो खण्डों में पुनः प्रकाशित किया गया है। स्वामी जी ने अपनी आत्मकथा 'कल्याण मार्ग का पथिक' लिखी है जो किसी उपन्यास की तरह ही लोकप्रिय है। इसमें आपने अपने जीवन की किसी भी गुप्त बात को छिपाया नहीं है। आत्मकथा साहित्य में यह बेजोड़ ग्रन्थ है। वेद भाष्यकार डा. आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी के सुपुत्र डा. विनोदचन्द्र विद्यालंकार जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर एक भव्य ग्रन्थ 'एक विलक्षण व्यक्तित्वरू स्वामी श्रद्धानन्द' लिखा है। इस ग्रन्थ की महत्ता का अनुमान इसे पढ़कर ही लगाया जा सकता है। हर साहित्य प्रेमी को इस ग्रन्थ को पढ़ता चाहिये।

जिन दिनों स्वामी श्रद्धानन्द जी गुरुकुल कांगड़ी का संचालन करते थे तो वहां श्री मोहन दास गांधी भी आये थे। गांधी जी यहां आने से कुछ समय पूर्व ही दक्षिण अफ्रीका से भारत आये थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आपको मिस्टर गांधी न कहकर महात्मा गांधी के नाम से सम्बोधित किया था। गांधी जी के नाम के साथ 'महात्मा' शब्द का प्रथम प्रयोग स्वामी जी ने ही किया जो गांधी जी की मृत्यु तक उनके नाम के साथ जुड़ा रहा। यह बता दें कि जब गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में आन्दोलन किया था तो स्वामी श्रद्धानन्द जी के शिष्यों ने भारत में मेहनत व मजदूरी करके व भोजन आदि व्यय में कमी करके एक अच्छी बड़ी धनराशि गांधी जी को आन्दोलन में सहायतार्थ अफ्रीका भेजी थी। एक बार इंग्लैण्ड में विपक्ष के नेता रैम्जे मैकडानल, जो बाद में इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री बने, गुरुकुल आये और स्वामी जी के साक उनें निकट रहे। आपने अपने संस्मरणों में स्वामी श्रद्धानन्द जी को जीवित ईसा मसीह की उपाधि से स्मरण किया है। उन्होंने यह भी लिखा है कि यदि कोई व्यक्ति सेंट पीटर की मूर्ति बनाना चाहे तो मैं उसे स्वामी श्रद्धानन्द की भव्य मूर्ति को देखने की संस्तुति व संकेत करूगां। उनके जीवन की अनेक प्रेरणाप्रद घटनायें हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी स्वामी दयानन्द के व्यक्तित्व व कृतित्व सहित उनके मुख्य ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश व अन्य ग्रन्थों की देन थे। हिन्दी जानने वालों के लिए सत्यार्थ प्रकाश से बढ़कर कोई धर्म ग्रन्थ नहीं है। सभी को इसको पढ़कर अपने कर्तव्य का बोध प्राप्त करना चाहिये। इसको पढ़ने के बाद अन्य सभी ग्रन्थ भी पढ़े जा सकते हैं। संसार का यह उत्कृष्ट असाम्प्रदायिक एवं सत्य व असत्य का बोध व विवेक कराने वाला एकमात्र ग्रन्थ है। अधिक विस्तार न कर हम लेख को विराम देते हुए जननायक आदर्श महापुरुष, ईश्वर व वेद भक्त, देश भक्त व शिक्षा शास्त्री, समाज सुधारक और दलितोद्धारक, शुद्धि का सुदर्शन चक्र चलाने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपनी भावनायुक्त श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः09412985121

जहां नहीं होता कभी विश्राम ओ३म् आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 38 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी दिव्यानन्द जी, स्वामी प्रणवानन्द जी व स्वामी धर्ममुनि जी के सानिध्य में

डॉ. अशोक कुमार चौहान की अध्यक्षता व आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व में

वायु प्रदुषण व पर्यावरण की शुद्धि के लिए

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 27, 28, 29 जनवरी 2017 (शुक्र, शनि व रविवार)

स्थान : उत्सव ग्राउण्ड, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, पटपड़गंज, पूर्वी दिल्ली (निकट मैट्रो स्टेशन प्रीत विहार व आनन्द विहार)

राष्ट्रीय एकता तिरंगा यात्रा : शुक्रवार 27 जनवरी 2017, प्रातः 10.30 बजे

रूट : उत्सव ग्राउण्ड से चलकर वाया आर्य नगर, अग्रसेन सोसायटी, सांई चौक मधु विहार, स्वामी दयानंद मार्ग, कड़कड़ी मोड़, विकास मार्ग विस्तार, दयानन्द विहार कड़कड़डूमा मैट्रो स्टेशन, जागृति एनक्लेव, डी-ब्लॉक आनन्द विहार, विवेकानंद स्कूल, डी.ए.वी. श्रेष्ठ विहार, योजना विहार, यमुना स्पोर्ट्स कम्पलेक्स, विवेकानंद-महिला कालेज, सांसद महेश गिरी कार्यालय, आर्य समाज विवेक विहार, झिलमिल मैट्रो लालबती, आर-ब्लॉक, दिलशाद गार्डन, आर्य समाज दिलशाद गार्डन स्वामी दयानन्द अस्पताल, विवेक विहार फेज-2, झिलमिल कस्तूरबा नगर लालबती, शिक्षक सदन, आर्य समाज, सूरजमल विहार, शरद विहार-ऋषभ विहार रोड़ ए.जी.सी.आर. एनक्लेव, हरगोबिन्द एनक्लेव, कड़कड़ी लालबती से बांए, हसनपुर डिपो, उत्सव ग्राउण्ड में 1.30 बजे समापन। संयोजक- सुरेश आर्य, देवेन्द्र भगत राकेश भटनागर, सुशील आर्य, योगेन्द्र शास्त्री, संतोष शास्त्री, प्रवीण आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, ब्र. दीक्षेन्द्र, विश्वनाथ आर्य, ओमवीर सिंह, महेश भार्गव, जगदीश पाहुजा राजेन्द्र खारी, विजय आर्य, पियुष शर्मा, के.के. यादव, शिवम मिश्रा, काशीराम, प्रदीप आर्य, रविन्द्र मेहता, शिशुपाल आर्य, विनोद बजाज, सुनील भाटिया, यश शर्मा

मुख्य यजमान : सर्वश्री दर्शन अग्निहोत्री, सुरेन्द्र गम्भीर, रामलुभाया महाजन, डॉ. लाजपतराय आर्य चौधरी

शुक्रवार 27 जनवरी, 2017		शनिवार 28 जनवरी, 2017		रविवार 29 जनवरी, 2017	
यज्ञ	: प्रातः 8.30 से 9.30	101 कुण्डीय विराट् यज्ञ	: प्रातः 8.30 से 10.30	151 कुण्डीय विराट् यज्ञ	: प्रातः 8.30 से 10.30
राष्ट्रीय एकता तिरंगा यात्रा	: प्रातः 10.30 से 1.30	ध्वजारोहण	: प्रातः 10.45 बजे	ध्वजारोहण	: प्रातः 11.00 बजे
वेद-संस्कृत रक्षा सम्मेलन	: दोपहर 2.30 से 5.30	युवा चेतना सम्मेलन	: 11.00 से 2.00	राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन	: 11.30 से 2.30
भव्य संगीत संध्या	: रात्री 7.00 से 9.30	महिला शक्ति सम्मेलन	: 2.15 से 5.00	शिक्षा संस्कृति बचाओ सम्मेलन	: 2.30 से 5.00
श्री नरेन्द्र आर्य ''सुमन'', श्रीमती अर्चना मोहन		व्यायाम शक्ति प्रदर्शन	: 5.00 से 6.30	कार्यकर्ता सम्मान समारोह	: 5.00 से 5.30
		राष्ट्र रक्षा सम्मेलन	: 7.30 से 9.30	धन्यवाद एवम् शांतिपाठ समापन	: सायं 5.45 बजे

1. दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने की संख्या के बारे में 8 जनवरी 2017 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास का उचित प्रबन्ध किया जा सके। सम्पर्क : वेदप्रकाश आर्य-9810487559, संजय आर्य-9871467689, सौरभ गुप्ता-9971467978
2. कृपया यजमान बनने के इच्छुक आर्य बन्धु व आर्य समाज अपना यज्ञकुण्ड 8 जनवरी 2017 तक यज्ञवीर चौहान - 9810493055, राजीव कोहली -9968266014, विकास शास्त्री - 8010204256, अरूण आर्य - 9818530543, विकास शर्मा - 9818161291 पर आरक्षित करवा लें।

हजारों की संख्या में पहुँचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

अपील

इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है कृपया धनराशी क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली'' के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि-लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, शुद्ध घी, रिफाईन्ड, सब्जी, मसाले आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें

निवेदक

डॉ. अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष	यशोवीर आर्य रामकुमार सिंह कृष्णचन्द पाहूजा सत्यभूषण आर्य सुभाष बक्कर स्वतंत्र कुकरेजा आनन्दप्रकाश आर्य रामकृष्ण शास्त्री राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	आनन्द चौहान ठाकुर विक्रम सिंह मायाप्रकाश त्यागी प्रभात शेखर नवीन रहेजा अरूण बंसल विजयारानी शर्मा अमीरचन्द रखेजा	डॉ. रिखबचन्द जैन अमरनाथ गोगिया ओमप्रकाश पांडेय संजीव सेठी प्रि0 अन्जु महरोत्रा योगराज अरोड़ा जवाहर भाटिया हरिमोहन शर्मा, बब्बु	विकास गोगिया प्रदीप तायल रवि चड्ढा सत्यवीर चौधरी रमेशकुमारी भारद्वाज ओम सपरा ब्रह्मप्रकाश मान लक्ष्मण पाहुजा	सुरेन्द्र कोहली गायत्री मीना पी.के. मित्तल डॉ. डी.के. गर्ग चन्द्रप्रभा अरोड़ा रविदेव गुप्ता सुभाष चांदला प्रेमपाल शास्त्री
राष्ट्रीय महामंत्री दुर्गेश आर्य राष्ट्रीय मंत्री धर्मपाल आर्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष		स्वागत अध्यक्ष		स्वागत मन्त्री	

स्वागत समिति : सर्वश्री गुरूदीनप्रसाद रस्तोगी, जितेन्द्र डावर, राजेश मेहन्दीरत्ता, चत्तरसिंह नागर, के.के. सेठी, सुरेन्द्र गुप्ता, धर्मदेव खुराना, अमित मान, डॉ. आर.के. आर्य, अन्जु जावा, सुरेन्द्र शास्त्री, नीता खन्ना, उर्मिला आर्या, अर्चना पुष्करणा, शीला ग्रोवर, पुष्पलता वर्मा, कै. अशोक गुलाटी, लक्ष्मी सिन्हा, विनोद खुल्लर, राजकुमारी शर्मा, उषाकिरण कथूरिया, वीरेन्द्र जरयाल राजेन्द्र लाम्बा, संदीप आहूजा, सुभाष ढींगरा, क0 धर्मवीर मलिक, सत्यपाल भाटिया, अजय कपूर, मनोहरलाल चावला, वेदप्रभा बरेजा, प्रवीन तायल, महेन्द्र मनचन्दा, डॉ. गजराजसिंह आर्य

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, मो. 9810117464, 9312406810, 9312223472, 9013137070
E-mail: aryayouth@gmail.com Website: www.aryayuvakparishad.com
Group: aryayouthgroup@yahoogroups.com • Join-http:// www.facebook.com/group/aryayouth

विजय हाई स्कूल सोनीपत व श्रद्धानन्द बलिदान दिवस की झलक

रविवार, 18 दिसम्बर 2016, सोनीपत के विजय हाई स्कूल का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। चित्र में-छात्र को सम्मानित करते विशिष्ट अतिथि डा.अनिल आर्य,प्रबन्धक मनोहरलाल चावला,पूर्व विधायक अनिल ठक्कर,वेदप्रकाश आर्य व प्रधानाचार्य शालिनी चावला। बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम सभी ने पसन्द किए। द्वितीय चित्र-स्वामी श्रद्धानन्द शोभा यात्रा में डा.अनिल आर्य-धर्मपाल आर्य,जगदीश प्रसाद शर्मा, अरूण आर्य,विमल आर्य,शिवम मिश्रा,विश्वनाथ आर्य,राकेश आर्य,ओमवीर सिंह,योगेन्द्र शास्त्री,प्रदीप आर्य,दीपक आदि के साथ।

दिल्ली में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर भव्य शोभा यात्र आयोजित

रविवार, 25 दिसम्बर 2016,आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य द्वारा आयोजित शोभा यात्रा में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के सैंकड़ों युवको ने भाग लिया, राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य मोटर साईकिल पर अपने साथियों श्री यशोवीर आर्य, रामकुमार आर्य, अनुज, दीपक आदि के साथ व द्वितीय चित्र–आर्य नेता श्री दर्शन अग्निहोत्री के साथ एक ग्रुप फोटो।

गुरूकुल गौतम नगर व आर्य समाज, अशोक नगर, दिल्ली का उत्सव सोल्लास सम्पन्न

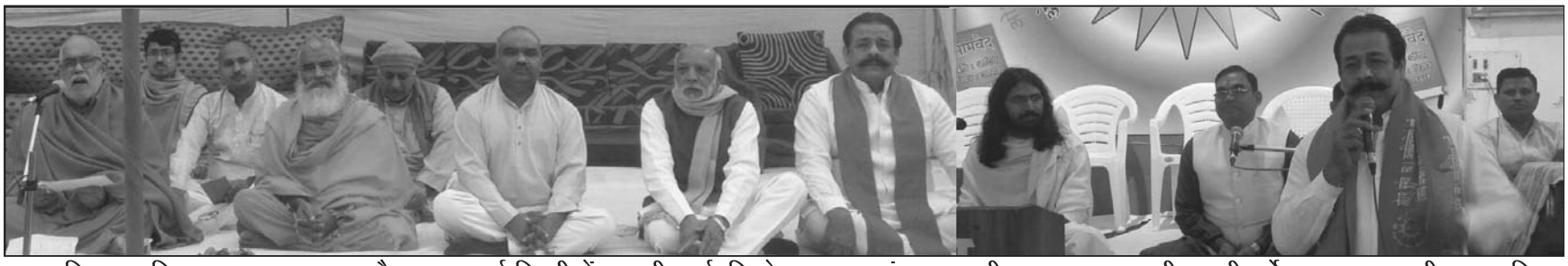

रविवार,18 दिसम्बर 2016, गुरूकुल गौतम नगर, नई दिल्ली में यज्ञ की पूर्णाहूति के अवसर पर मंच पर स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, ठाकुर विक्रम सिंह, अमनसिंह शास्त्री व डा.अनिल आर्य आदि। द्वितीय चित्र–आर्य समाज,अशोक नगर,दिल्ली के उत्सव पर डा.अनिल आर्य सम्बोधित करते हुए,मंच पर आचार्य सोमदेव (अजमेर), आचार्य भानुप्रताप शास्त्री (बरेली)। कुशल संचालन प्रधान श्री प्रकाश आर्य ने किया।

गुरूग्राम व फरीदाबाद में आर्य केन्द्रीय सभा ने मनाया श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

रविवार, 25 दिसम्बर 2016, आर्य केन्द्रीय सभा गुरूग्राम (हरियाणा) के तत्वावधान में आर्य समाज, सैक्टर–4, श्रद्धानन्द पुरम में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। आचार्य सोमदेव जी(अजमेर) के प्रवचन हुए व आचार्य सतीश सत्यम के मधुर भजन हुए। चित्र में–महाशय रामचन्द आर्य के साथ डा. अनिल आर्य,प्रधान लक्ष्मण पाहुजा, महामंत्री प्रभुदयाल चौटानी,चन्द्रप्रकाश गुप्ता,नरेन्द्र आर्य,वरूण आर्य,अरविन्द शास्त्री,सतीश सत्यम आदि। द्वितीय चित्र–फरीदबाद में आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री पी.के.मितल व स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में आयेाजित शोभायात्रा में परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सत्यभूषण आर्य(एडवोकेट),श्री दासराम आर्य,हरिओम शास्त्री व सतपाल रहेजा आदि। महामंत्री डा. गजराजसिंह आर्य ने कुशल संचालन किया। जिला अध्यक्ष जितेन्द्रसिंह आर्य के साथ परिषद् के युवकों ने भारी सख्या में भाग लिया।

आर्य समाज,अशोक विहार, फेज-2 व रोहिणी सैक्टर-5, दिल्ली का उत्सव सम्पन्न

रविवार,18 दिसम्बर 2016,आर्य समाज,अशोक विहार,फेज–2,दिल्ली के उत्सव पर प्रधान श्री सत्यपाल गांधी का स्वागत करते डा.अनिल आर्य,आचार्य प्रेमपाल शास्त्री,पं.काशीराम शास्त्री,राकेश बेदी,वीरेन्द्र आदि । द्वितीय चित्र–आर्य समाज,सैक्टर–5,रोहिणी,दिल्ली के उत्सव पर प्रवचन करते आचार्य राजु वैज्ञानिक,मंच पर आर्य तपस्वी श्री सुखदेव जी,डा.अनिल आर्य। मंच संचालन मंत्री सुरेन्द्र चौधरी व सुदेश डोगरा ने किया।

दिल्ली के बाहर के आर्य जन ध्यान दें:-

कृपया आर्य महासम्मेलन में अपने आने की सूचना शीघ्र देवें जिससे असुविधा न हो

सम्पर्क: देवेन्द्र भगत: मो. 9312406810, राम कुमार सिंह: मो. 9868064422, यज्ञवीर चौहान: मो. 9810493055

अपील: यदि आप केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों से सन्तुष्ट हैं तो हमें सहयोग करें,कृपया अपना सहयोग परिषद् के खाता सं. **10205148690** स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–110007, आई.एफ.एस.कोड **-SBIN0001280** पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9868002130** पर एस.एम.एस कर दें जिससे रसीद भेजी जा सके। अग्रिम धन्यवाद सहित।

– डा. अनिल आर्य, मो.09810117464

शोक समाचार: विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्रीमती विद्यावती जी (माता डा. सुधीर गुप्ता, पठानकोट) का निधन।
2. श्रीमती वेदवती (धर्मपत्नि श्री जयपालसिंह आर्य, गाजियाबाद) का निधन।
3. श्री राजबहादुर सिंह (पिता श्री रामचन्द्र सिंह, कबीर बस्ती) का निधन।
4. श्रीमती विद्यावन्ती चावला (भाभी श्री मनोहरलाल चावला, सोनीपत) का निधन।
5. श्रीमती धन्नोदेवी (धर्मपत्नि स्व. श्री बद्रीप्रसाद आर्य, मंगोलपुरी) का निधन।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970